

घर में आया गुहेटा

ऋषि कुमार तिवारी

साँप, बिच्छु या गुहेटा के दिखते ही हमारे मन में डर समा जाता है। और उसे मारने के उपाय सोचने लगते हैं, या फिर उसे दूर भाग जाने पर विवश करते हैं। पिछले वर्ष जून माह के आखिरी सप्ताह में ऐसी ही घटना मेरे घर में घटी जिसका वर्णन इस प्रकार है :

मेरी माँ बासन माँज रही थीं कि एकाएक उनकी नज़र एक भागते हुए गुहेटा पर पड़ी। घाग खूब तेज़ था, चिड़ियाँ चिकचिका रही थीं। माँ ने घबराकर बासन माँजना छोड़ दिया। और मुझे तथा मेरे भाई राजू को चिल्लाकर बोलीं, “अरे, दौड़ो, बड़ो भारी गुहेटा। गुहेटा अपनी जहाँ लकड़ी धरी है वहाँ गया।”

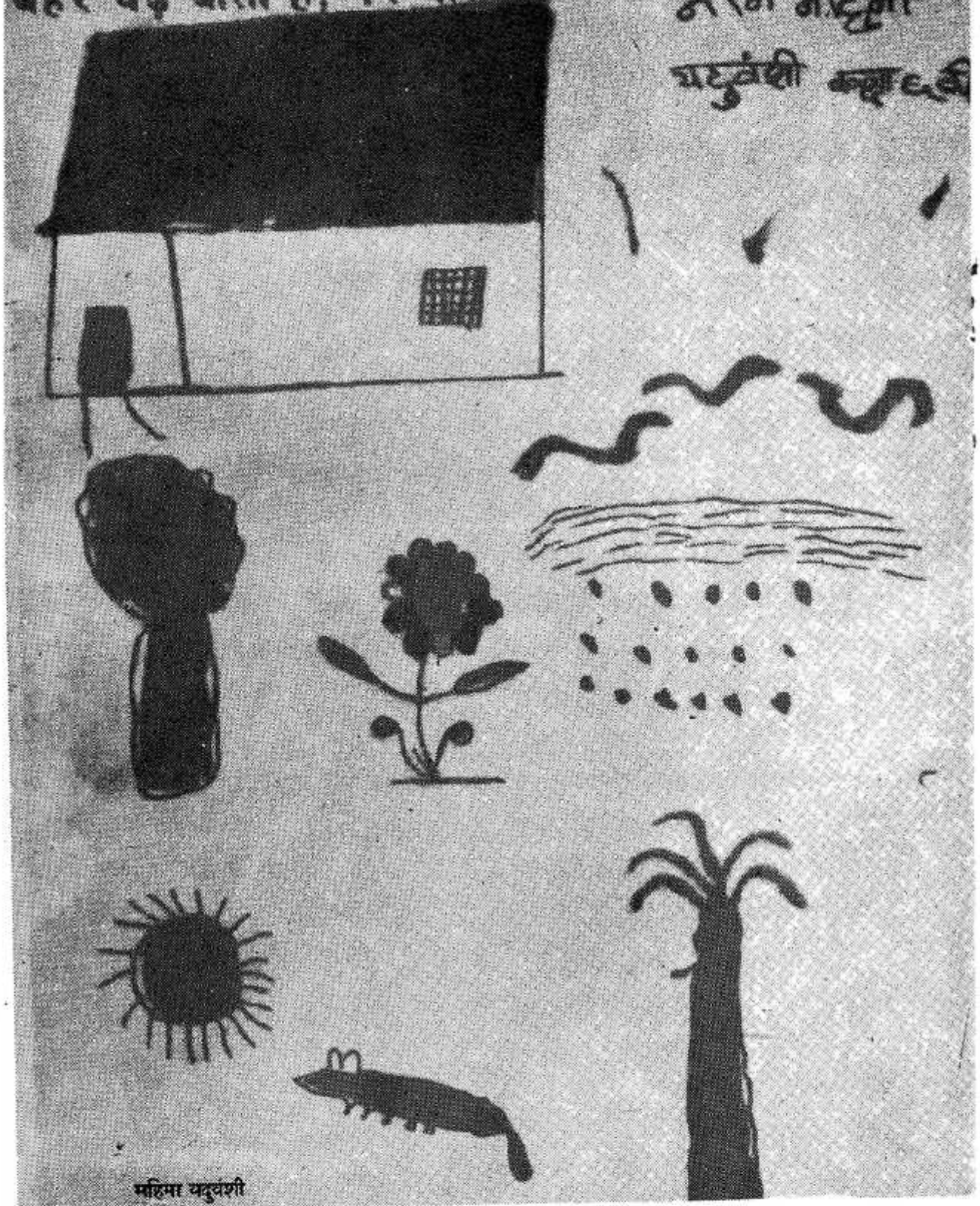
शोर सुनकर पास के घरों से भी लोग निकल आए और लाठियाँ लेकर अपनी-अपनी हद में बैठ गए, जिससे गुहेटा उन लोगों के घरों में न जा पाए। हमारे घर में ही घुसा रहे। मेरे पिताजी आए। उन्होंने सबको धीरज दिया, “घबराने की ज़रूरत नहीं है, वह भाग जाएगा। वह भी तो अपन लोगों से डर रहा होगा। शोर कम होने पर अपने आप चला जाएगा।”

सबको भाग जाने को कहा, लेकिन फिर भी लोग तथा लुगाइयाँ अपने घरों के पास गुहेटा के निकलने का इन्तजार करते रहे। हमने भी यह चाल खेली कि ये लोग चले जाएँ तब गुहेटा को निकलने का मौका दें। 15-20 मिनट के बाद हमने लकड़ियों के ढेर में तथा बागड़ में लाठी से खड़खड़ाया तो गुहेटा वहाँ से भागा लेकिन उसे भागने का मौका न मिला क्योंकि वहाँ दूसरे घर के लोग छेड़ी में लाठी लेकर बैठे थे। वह फिर लौटकर पुनः लकड़ियों के ढेर पर चलकर हमारे घर में दीवार पर चढ़कर घुस गया। अब समस्या विकट थी।

कहते हैं गुहेटा काट खाए तो ज़हर चढ़ जाता है, मर जाते हैं। इससे और भी डर लगे। कोई घर में न जाए। पुरा-पड़ोस से बल्लम, बरछी, लाठी लेकर 4-5 हमारे मित्र आ गए, लेकिन कुछ न हुआ। गुहेटा चिमाई दाबकर बैठ गया होगा। अन्त में हारकर हम भी बठ गए। और उसके अपने आप चले जाने का इन्तजार करते रहे। जब तक

अब समस्या विकट थी। कहते हैं गृहेटा कट जाए तो
बहर चढ़ जाता है, मर जाते हैं।

नाम गीट्टुगा
यदुवंशी कथा



महिमा यदुवंशी

ऋषि कुमार तिवारी, आठवीं, बन्खेडी, पिपरिया, म. प्र.।

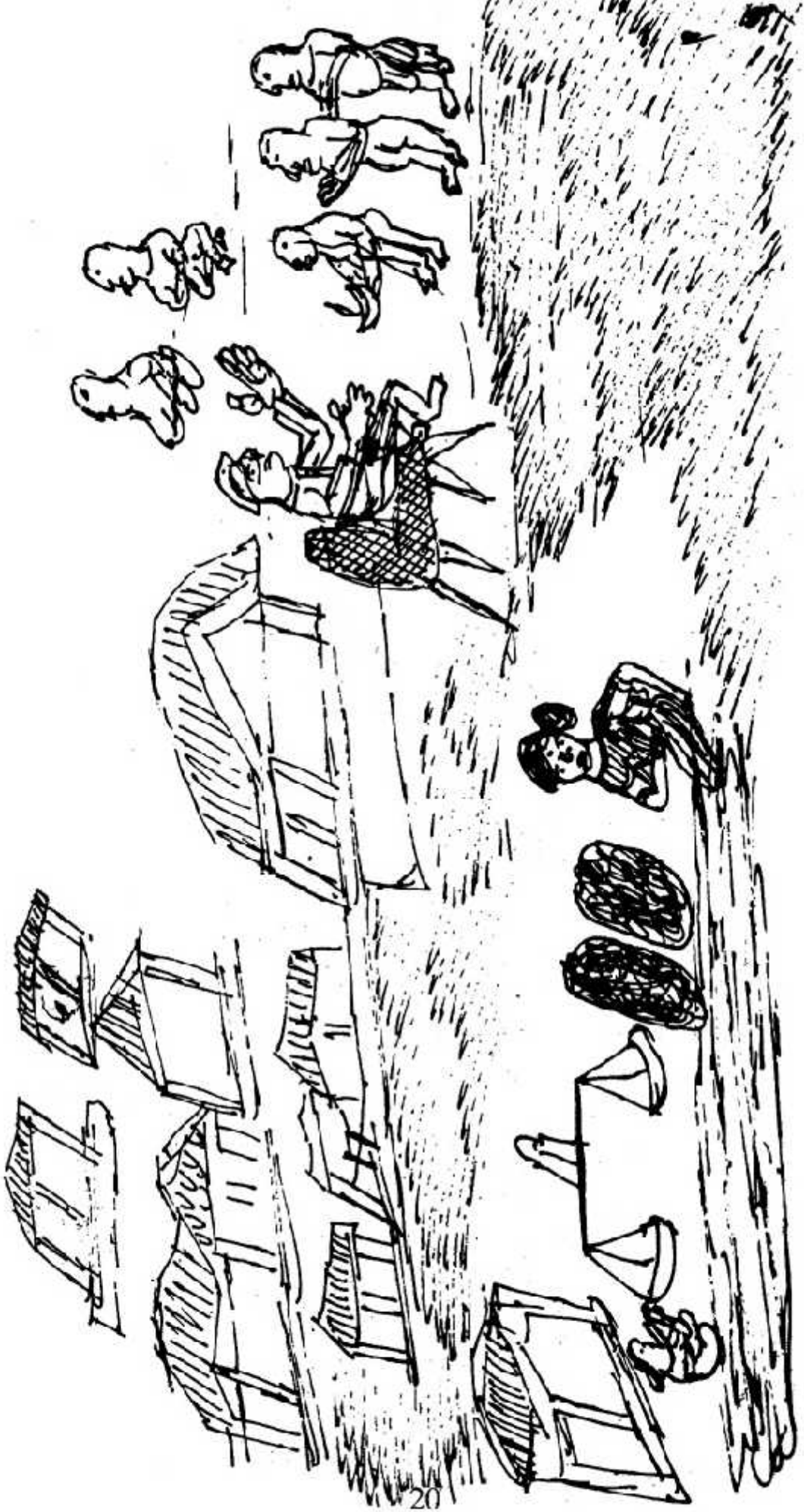
महिमा यदुवंशी, छठवीं, पिपरिया, म. प्र.। कहानी तथा चित्र चकमक जुलाई, 1985 में प्रकाशित।

आँखों से उसे निकलकर जाते हुए न देखते, चैन कहाँ? ऐसे करते-करते सॉझ हो गई। हिम्मत करके घर में खाना आदि के लिए तो जाना ही पड़ेगा। एक हाथ में लाठी लेकर जाते तनक सी सरसराहट से गुहेटा होने का अन्देशा होता, लेकिन चूहा निकलता। होते-होते उस ओर से निश्चिन्त हो गए। सोचा भाग जाएगा। पानी भी नहीं गिर रहा था, घाम तेज़ था।

बुधवार के दिन अचानक हमने उस गुहेटा को घर के भीतर दूध का लोटा उतारते देखा। अब तो बड़ी आफत थी। फिर वह घर के ऊपर खपरों में से निकला तथा बार-बार पूरे घर में बाहर भीतर हो रहा था।

अब हमारे सामने बड़ी समस्या थी। कैसे मारें उसे? हमने देखा कि वह बड़ेरी पर खपरों में से निकलने की कोशिश में गया है। एक उपाय सूझा कि सपेरों को बुलाया जाए। मैं सपेरों को बुलाने दौड़ा जो समाधि के पीछे रहते हैं। इधर घर में इसे बल्लम से मारना चाहा लेकिन घर में ऊपर दौंव नहीं लग रहा था। बूढ़ा सपेरा और उसका 13-14 साल का लड़का दौड़े-दौड़े आए और लड़के ने लपककर गुहेटा की पूँछ पकड़ ली और उसे खींचना चाहा पर वह नहीं खिंचा। बूढ़ा सपेरा भी उसकी पूँछ पकड़कर लटक गया, लेकिन गुहेटा टस से मस न हुआ। फिर लड़के ने घर के ऊपर चढ़कर और बूढ़े सपेरे के पूँछ पकड़े रहने से लड़के ने साधारण तौर से, बिना डरे, आसानी से गुहेटा की गरदन पकड़ ली और खींचकर ले आया। लेकिन हमारे घर के खपरे फूट गए जिससे हमें बाद में बड़ी परेशानी हुई। सपेरा बोला, “काल था बाई शंकर भगवान की किरपा से बड़ी कलह टल गई। लियाओ पाँच रुपए और कपड़ा तथा अनाज।” बड़ी मुश्किल से वह दो रुपए, एक कमीज तथा आटा लेकर ही रहा।

अब फिर सुनो। 3-4 दिन बाद फिर से दूसरा गुहेटा निकला जिसे हमने चुपचाप आ जाने दिया। तथा सपेरे से पकड़वा दिया। फिर दो रुपए तथा एक घड़ा देना पड़ा। बाद में पता चला कि सपेरे ने गुहेटा तुरन्त मार दिया। उसकी खाल निकाल ली थी। जबकि उस दिन उसने एक जड़ी-बूटी निकालकर उसके ऊपर से उतारी थी तथा मंत्र पढ़ा था, तथा 15 दिन रखने का कौल किया था।



जनगढ़सिंह प्रयाग

गाँव में आर्य नेताजी

सीमा खरे

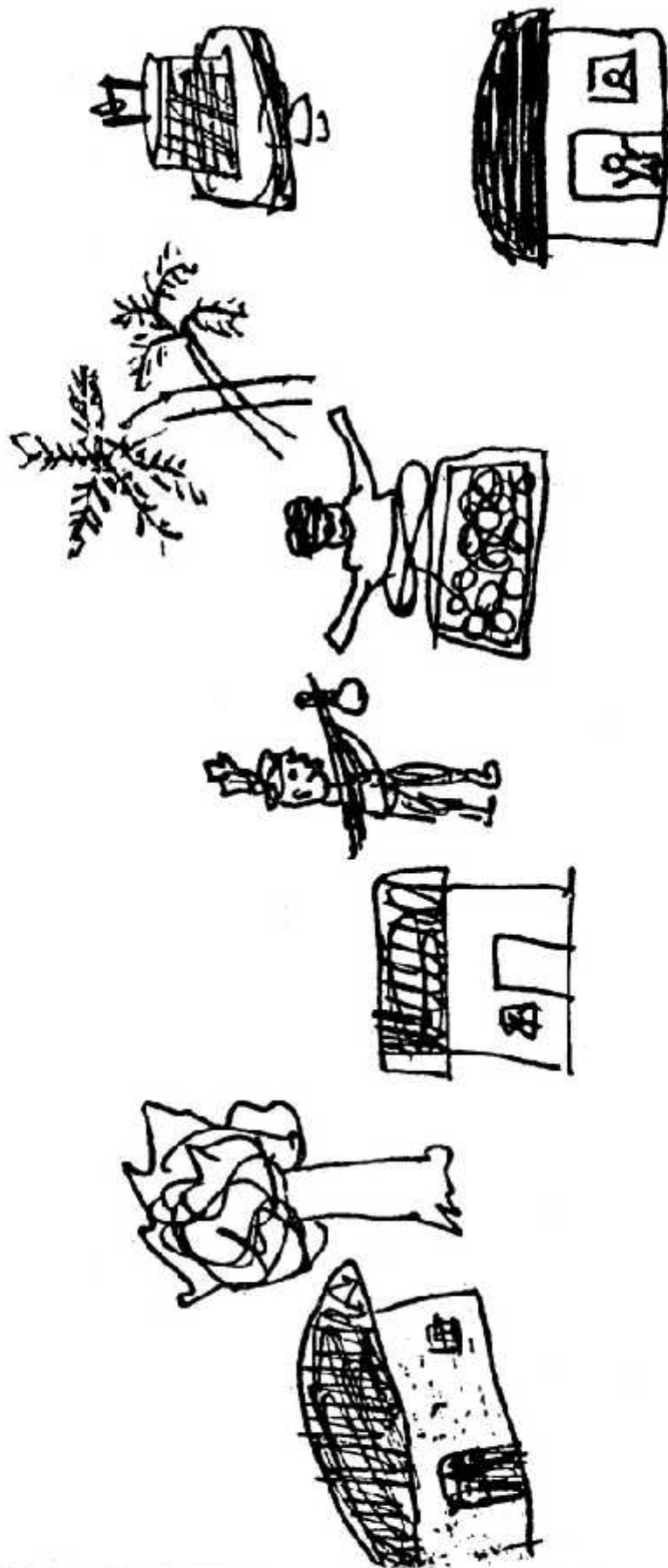
बात उस समय की है जब हमारे ही क्षेत्र के एक विधायक महोदय प्रदेश के वनमंत्री थे और भैंरोघाट पिपरिया आए हुए थे। भैंरोघाट जबलपुर जिले की पाटन तहसील का 3000 की आबादी वाला गाँव है। यह गाँव राजनीतिक दृष्टि से काफी पिछड़ा दिखाई देता है। इसका प्रमाण मैं सच ही सच घटित घटना से दे रही हूँ।

हमारे गाँव में एक “जिन्नत बी” नामक मुसलमान महिला हैं, जो कि रुई के धंधे से अपना जीवन यापन चलाती हैं। वह शाहपुरवाली के नाम से जानी जाती हैं। जिस दिन नेता जी गाँव में आए उस दिन वे कुछ ज़्यादा ही प्रसन्न नज़र आ रही थीं। प्रसन्नता का राज उस समय खुला, जब उन्होंने अपने मुख से बात उगली।

उन्हीं के शब्दों में, “मैंने सुनो कि नेताजी आ रहे हैं। जहाँ-ताँ कलश जल रये हैं। मैं खाना बनातई से भगत चली आई, आके देखो तो नेता जी दिखाऊतई ने हते, सबरे आदमी-आदमी से दिखात हैं। मोरे बगल में नर्स-बाई ठाँड़ी, हतीं, मैंने उसने पूछो कि नेताजी कहाँ हैं, जो आवे बारे हते। उनने एक आदमी की ओर हाथ बढ़ा दओ, जो कि धुतिया-कुर्ता पहनें हतो और टोपी लगायें थो। मैं तो देखतई से चकित हो गई, कि अरे नेता सोई (भी) आदमी घाँई (जैसा) होत, मैं तो समझत थी कि कोई देवी-देवता हुइए, जब तो आदमी देखबे खों मरे जा रये हैं। अरे जब उनने बोल्बो शुरू करो तो मैं तो मुँह पलटा खें घरे आ गई, कायकि बे सोई आदमी घाँई बोलत हते, और घरे आ कें खूब पछताई कि रोटी छोड़खें तो मैं गई, और देवी-देवता कछु नें मिलें।”

सीमा खरे, दस्वी, भैंरोघाट, जबलपुर, म.प्र.। चकगक अक्टूबर 1987 में प्रकाशित।

जनगढ़ सिंह श्याम, मण्डला, म. प्र.।



दिव्या अग्रवाल

बालाराम, आठवीं, उमरधा, होशंगाबाद, म.प्र.। चकमक जनवरी, 1987 में प्रकाशित।
दिव्या अग्रवाल, छटवीं, भोपाल, म.प्र.।

ढोंगी साधू

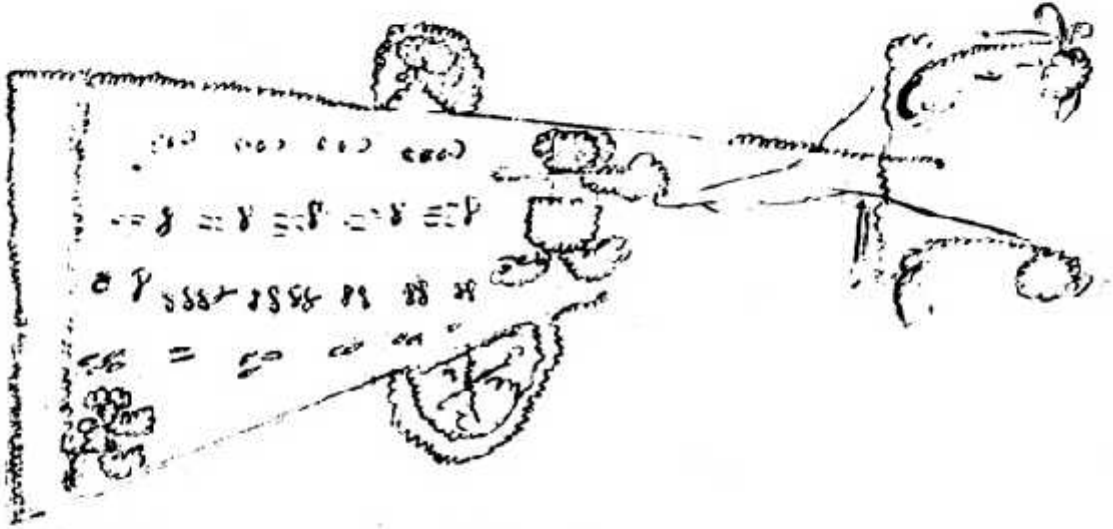
बालाराम

एक दिन हमारे इधर ढोंगी साधू आए तो उन्होंने कॉपी में लिख दिया कि हम मौनी साधू हैं, हमसे ज्यादा बात मत पूछो। तो वे ऐसे साधू थे जो कि रात भर बोलते थे और दिन भर मौनी रहते थे। एक दिन एक आदमी ने कहा, साधू महाराज इस कठर की सब्जी कैसे बनाओगे तो उसने सहन (इशारा) से बता दिया। तो वह आदमी समझ नहीं पाया तो ढोंगी साधू ने बोलकर कहा, कठर को छीलकर सब्जी बनाएँगे। तो आदमी हँस दिया और ढोंगी साधू से बोला, कि तुम साधू नहीं हो तुम तो पाखण्डी हो। ढोंगी साधू चुप रह गया तो आदमी बोला, साधू अब बोल क्यों नहीं रहे। साधू बोला, तू मुझसे दुआ ले ले मगर किसी को कुछ कहना नहीं। तो आदमी बोला कि तू दुआ मुझसे ले ले क्यों मनुष्यों को बता रहा है कि मैं साधू हूँ। तू साधू नहीं तू पाखण्डी है। साधू गुस्सा होकर बोला, तुझे भस्म कर दूँगा। तो आदमी बोला कि मैं तुझे भस्म कर दूँगा।

तो गाँव वाले लोग और लुगाहियेँ और बाल-बच्चे भी आए तो ढोंगी साधू बोला कि मैं तुम्हें भस्म कर दूँगा। अगर बात की तो। तो एक लड़का बोला तू भस्म करेगा। तो मैं तुझे कुल्हाड़ी से काट दूँगा। ढोंगी साधू बोला कि अब मैं भस्म कर रहा हूँ और धूल उठाकर बैठ गया तो सब लोग बोले, नहीं महाराज नहीं महाराज ऐसा मत करो। तो एक लड़का बोला कि साधू की ऐसी की तैसी। साधू ने और धूल उठा ली और बोला देख। तो लड़का बोला की तू भी देख। और उनने लाठी उठा ली तो ढोंगी साधू ने उसकी तरफ धूल फेंक दी। तो लड़के ने समझा कि भस्म कर दिया। उसने भी साधू के सिर में लाठी मार दी। तो ढोंगी साधू ने आग जला ली और बोला अभी तो भस्म नहीं किया, अब भस्म कर दूँगा तुम सबको। तो सब बोले कि कर दे। ढोंगी साधू ने आग हाथ में ले ली और एक बुढ़े की तरफ दौड़ा और उसकी दाढ़ी में आग लगा दी। तो बुढ़े ने भी अच्छे चाटे मारे। ढोंगी साधू का उफान उतर गया और तीन दिन भूखा रहने दिया। फिर ढोंगी साधू को मार-पीटकर भगा दिया। ऐसे होते हैं ढोंगी साधू।

टमाटर और चोर

शकीला बानो



भंवरलाल

एक समय की बात है, जब मैं बहुत छोटी थी। मेरे पिताजी मण्डी में टमाटर बेचने जा रहे थे। मैं भी उनके साथ मण्डी चल दी। उस समय मैं बहुत चतुर और होशियार नहीं थी। मैं गाड़ी में बैठे-बैठे यह सोच रही थी कि सब्जी मण्डी कैसी होगी, तभी अचानक हमें रास्ते में चार चोर मिले। उनमें से एक बोला, गाड़ी यहीं खड़ी कर दो वरना मैं तुम्हें भून डालूँगा। दूसरा बोला, अगर किसी ने भी हिलने की कोशिश की तो मैं सबको कच्चा खा जाऊँगा। तभी मैं डरते-डरते बोल उठी, अरे भई, पहले इतने सारे टमाटर तो खा लो, फिर हमें खा लेना। उनमें से एक चोर मेरे पास आया और बोला, तू बहुत बकर-बकर कर रही है, तुझे जिसने बनाया वो मिट्टी कहाँ से लाया? मैं बोली, टमाटर के खेत से! सभी चोर हँस दिए। और एक बोला, खोदा पहाड़ और निकली चुहिया। हम लोगों के पास से उन्हें कुछ नहीं मिला, और वे खाली हाथ रह गए।

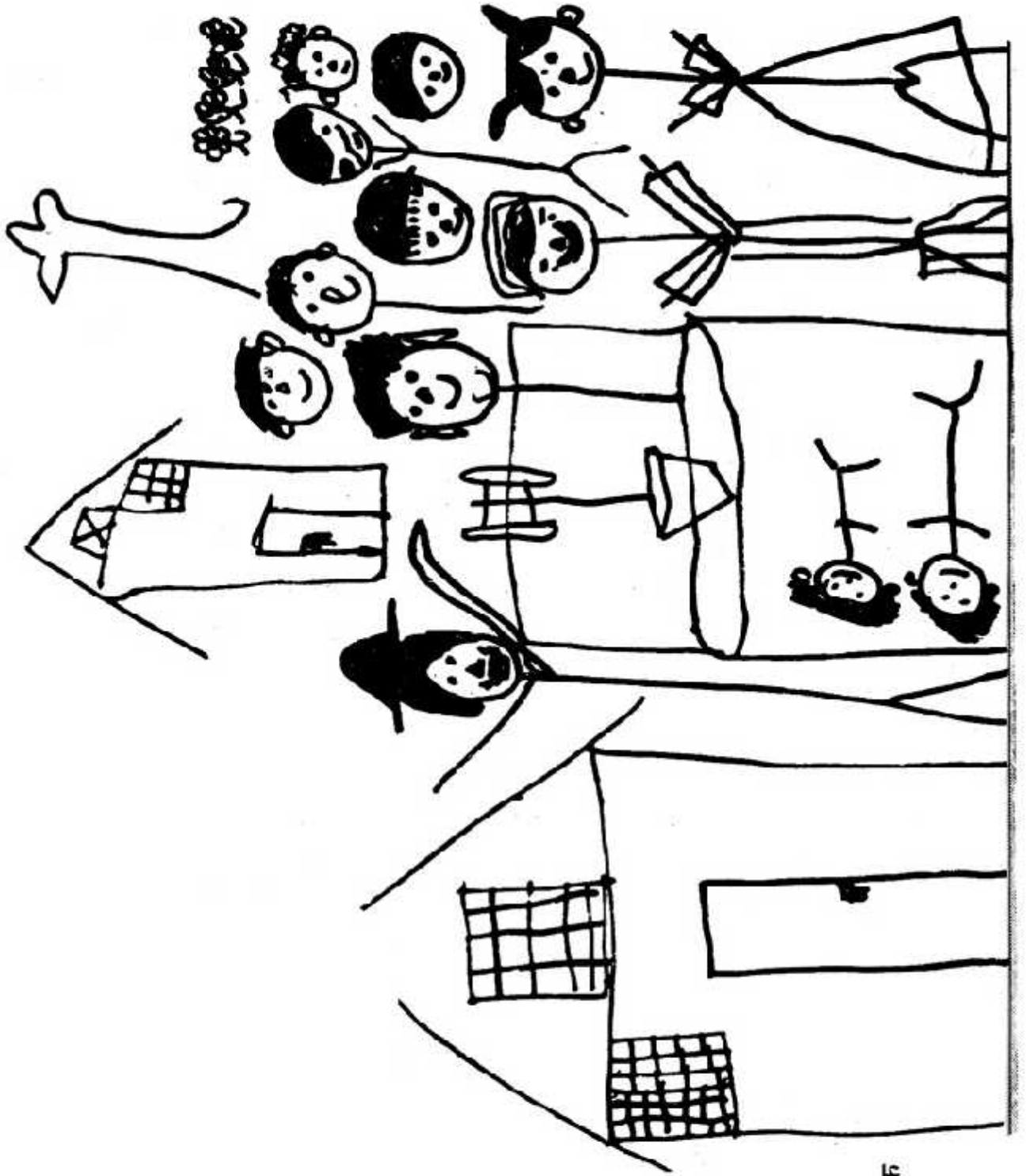
शकीला बानो, सातवीं, अगरोद, देवा, म. प्र.। चकमक फरवरी, 1986 में प्रकाशित।

भंवरलाल, छटवीं, लसूड़िया राठौर, मंदसौर, म. प्र.

इस मुसीबत से बचे थे कि तभी आगे चलकर हमें एक गधा मिल गया, जो निहायत शरीफ लेकिन बेशर्म था। इतना खूबसूरत गधा मैंने कभी देखा नहीं था। मैं पिताजी से बोली कि इस गधे को अपनी गाड़ी में बिठा लो। पिताजी चिल्लाकर बोले, अगर हम इसे अपनी गाड़ी में बैठा लेंगे तो यह हमारी गाड़ी ही तोड़ देगा। ये तो चार पैर का गधा है। तुझे मण्डी में दो पैर के गधे दिखाऊंगा।

बात करते-करते हम लोग मण्डी के करीब आ पहुँचे थे। मण्डी में बहुत भीड़ थी। मेरे पिताजी जिस आड़तिए को माल देते थे उसके नौकर हमारी गाड़ी के करीब आ चुके थे, और मुझे देखकर हँस रहे थे। मैं हैरान थी कि ये लोग क्यों हँस रहे हैं। उनमें से एक बोला, देखो यार इस लड़की ने कितना प्यारा काजल लगा रखा है। दूसरा बोला, इसके बाल कितनी विचित्र तरह से कंघी किए हुए हैं। उनमें से एक ने मुझे गोद में उठा लिया और हलवाई की दुकान में ले जाकर जलेबी और पोहा खिलवाया। पोहा, जलेबी खाकर मैं खुश हुई। क्योंकि, मेरी इस छोटी-सी उम्र में ये सबसे अच्छा दिन था जब मैंने पहली बार जलेबी और पोहा किसी हलवाई की दुकान से खाए। इन्हें तो मैं पहचानती भी नहीं थी!

अब हमारे टमाटर नीलाम हुए। बहुत पैसे मिले मेरे पिताजी को, दोनों जेब भर गए। टमाटर बेचकर हम वापस लौटे तो रास्ते में बारह चोर मिले। वे हमारे करीब आ रहे थे। मेरे पिताजी ने बन्दूक उठाई और हवाई फायर किए, जिसके डर से वे सब भाग गए। इस तरह हम सभी अच्छी तरह अपने घर लौटे। लौटकर सारी कहानी घर में अपने भाई-बहनों को सुनाई। सब बोले, अच्छा हुआ हम नहीं गए नहीं तो कोई हमें उठाकर ले जाता। नहीं चाहिए हमें ऐसे जलेबी और पोहे!



ग्रामा विवेक

सरपंच सहाब ने कुण्डी खुदाई

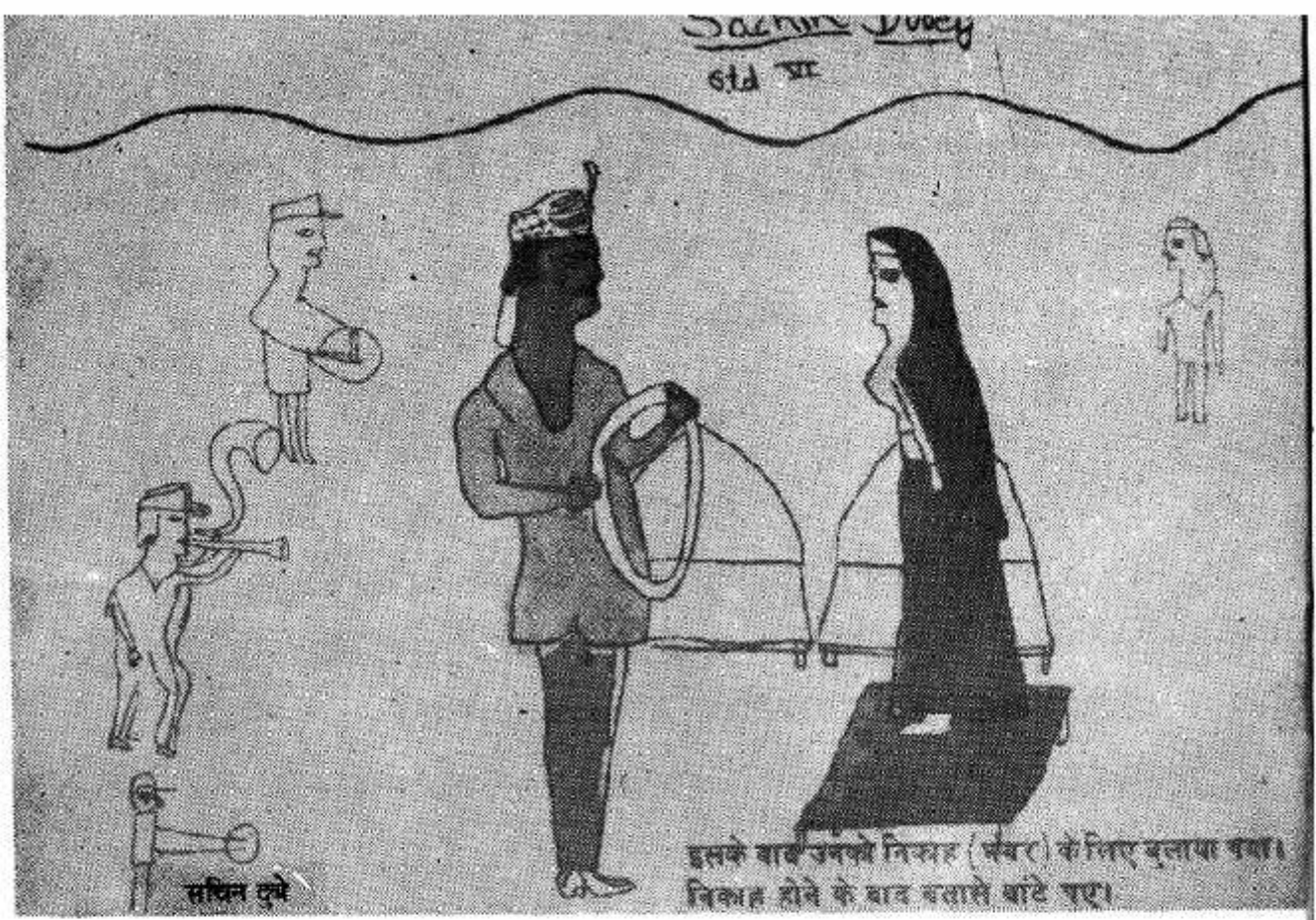
मेहरबान

एक बार गाँव में सरपंच सहाब ने स्कूल के पास कुण्डी खोदाई तो उसमें स्कूल के दो बालक पड़ गए। तो फिर हमारे गाँव के लोगों ने कहा कि सरपंच सहाब आपने बहुत गलती की है। तो सरपंच सहाब ने कहा कि मैंने क्या गलती की है। तो हमने कहा कि स्कूल के पास कुण्डी खोदाई क्यों। तो सरपंच सहाब ने कहा कि मैंने तो तुम्हारे पानी के लिए खुदाई। तो हमने कहा कि तुमने खुदाई तो इसको तुमने पूरी पक्की क्यों नहीं बनवाई। तो सरपंच सहाब ने कहा कि पैसा नहीं तो कैसे बनवाएँ। तो सब लोग ने कहा कि तुम्हारे पास सरकारी पैसा है तुम क्यों नहीं खर्च करे हो। तो सरपंच सहाब ने कहा कि पैसा तो है पन थोड़ा है। तो हमारे गाँव वाले मैम्बर सहाब ने कहा कि मैं तुमको पैसा दूँगा। तो सरपंच सहाब ने कहा कि कुण्डी नहीं बाँधी जाएगी।

तो फिर हमारे गाँव वाले लोगों ने रिपोर्ट की तो पुलिस आ गए। तो सरपंच सहाब ने कहा कि मेरे पास पैसा नहीं तो काय से कुण्डी बंधाई जाए। तो पुलिस वालों ने कहा कि आपने स्कूल के पास कुण्डी खोदना किसने कहा। तो सरपंच सहाब कुछ न बोले। तो हमने पुलिस वालों से कहा कि सहाब तुम ये कुण्डी पुरवा दो। तो पुलिस वालों ने उनको कहा कि अभी नहीं पुरवाई जाएगी। ये तो सरकारी फंदा है। तो फिर हमको क्या करना है। पुलिस वालों ने कहा कि तुम्हारी क्या इच्छा है। तो हमने कहा कि सहाब ये कुण्डी पुरवा दीजिए। और इसके पास एक बर्मा (हैण्डपम्प) लगा दीजिए तो फिर पुलिस वाले ने कहा कि तुम्हारी यही इच्छा है तो हमने कहा हाँ साहब यही इच्छा है।

मेहरबान, खरेली, देवास, म. प्र.। चकमक जनवरी, 1987 में प्रकाशित।

ऋचा विवेक, छह वर्ष, भोपाल, म. प्र.।



शदी की याद

साबिर हुसैन

न काका और न बुआ की शादी की याद है मुझे। और न भाई की या बहिन की शादी हुई अभी। किन्तु मुझे मेरे एक दोस्त की बहिन की शादी की थोड़ी-थोड़ी याद है। जिसे मैं आपके सामने पेश करता हूँ।

शादी स्थल तो मुझे याद नहीं और बारात किधर से आई थी, यह भी मुझे याद नहीं। क्योंकि उस समय मेरी अवस्था बहुत छोटी थी। फिर भी मुझे जितनी याद है उतनी इधर बता रहा हूँ।

बारात ट्रेलर से आई थी। बारात में लगभग 200 या 250 व्यक्ति थे। ट्रेलर की गड़गड़ाहट (दचड़-दचड़) से सारे बाराती थके हुए थे। इसलिए स्कूल के सामने पड़ी जगह पर एक लम्बी चादर बिछाकर सो गए। उनकी नींद देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था कि इनके लिए कंकड़ों वाली जगह मानो फूलों के बिस्तर हैं।

साबिर हुसैन, आठवीं, जुन्हेठ, होशंगाबाद, म. प्र.। सचिन दुबे, छठवीं, पिपरिया, होशंगाबाद, म. प्र.। कहानी तथा चित्र चकमक, जुलाई, 1985 में प्रकाशित।

फिर सभी बारातियों के लिए चाय व नाश्ता भेजा गया। इसके बाद उनको निकाह (भाँवर) के लिए बुलाया गया। निकाह होने के बाद बतासे बाँटे गए। इस प्रकार निकाह के बाद खाना नहीं खाते थे तो एक बुजुर्ग ने उनसे पूछा, “क्या बात है भाई, खाना क्यों नहीं खा रहे?”

इनने बोला, “हमें घड़ी चाहिए।” बुजुर्ग बोले, “हम घड़ी देंगे। पहले इस घड़ी में बताओ अभी कितना बजा है?”

“हमें क्या मालूम कितना बजा?”

“तो आप को मालूम नहीं तो घड़ी किस मर्ज के लिए चाहिए।”

इस पर बोले, “तो रेडियो चाहिए।”

सभी लोगों के कहने पर रेडियो दिया गया। दहेज में बहुत से बर्तन घर से तथा संबंधियों के द्वारा दिए गए। विदाई के समय तक रेडियो बजाया। फिर कहने लगे, “पराना दिया है। इसे हम नहीं लेंगे।” और देकर भागने लगे।

अब बेचारे हमारे मित्र के पिताजी एक जगह, उनकी अम्मा एक जगह और मित्र एक जगह रोने लगे। लड़की (मित्र की बहिन) पर क्या गुज़री ये बात हमें नहीं मालूम।

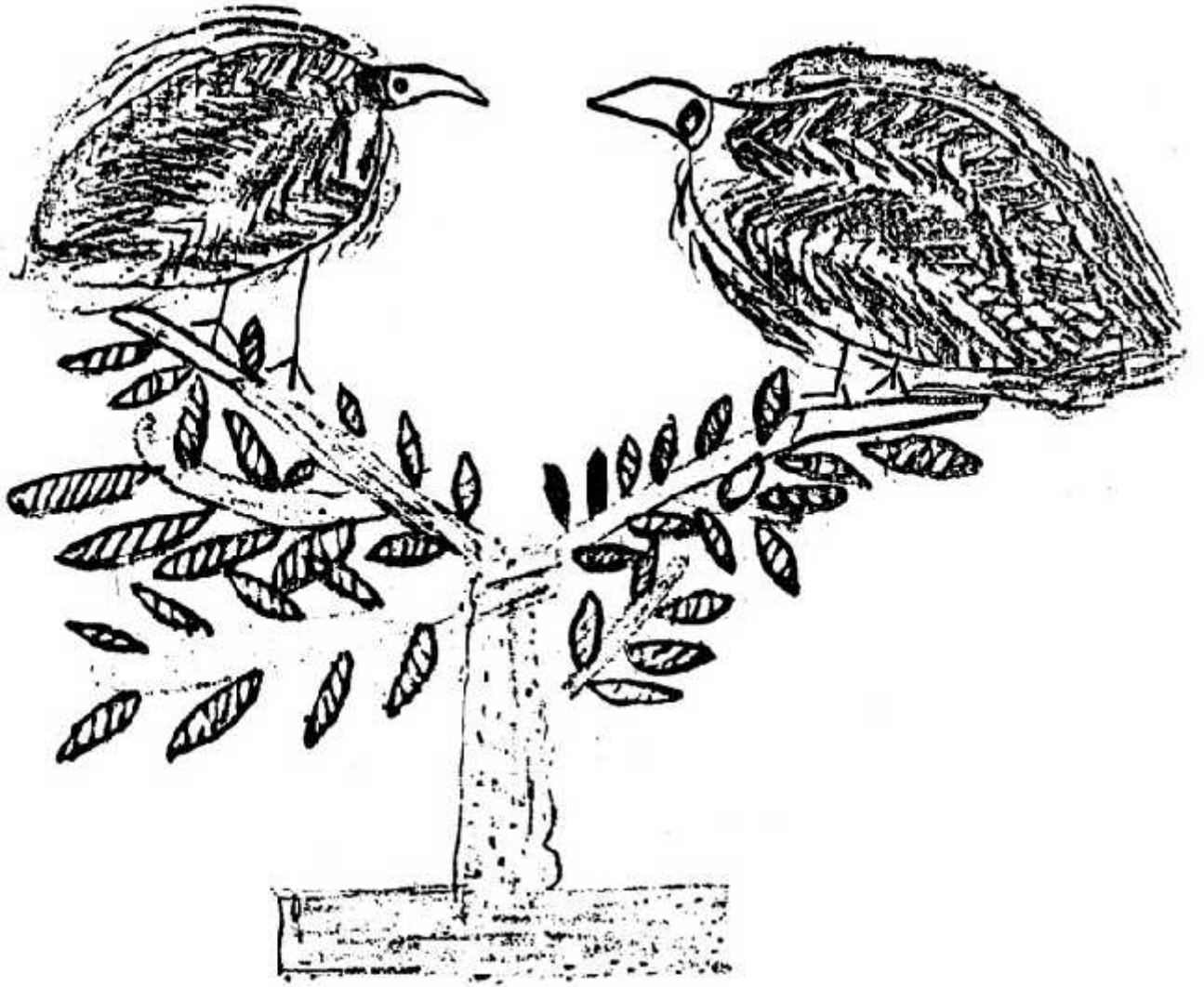
बड़ी मुश्किल से दुल्हा मियाँ को मनाकर लौटाया गया। विदाई का समय आया। जब लड़की की विदाई हुई तो लड़की व उसके माँ, बाप, भाई, बहन रोने लगे। यह बात हमें ठीक मालूम नहीं हुई जब ट्रेलर पर लड़की (दुल्हन) बैठ रही थी तो उसके पैर से नायलोन की चप्पल निकलकर गिर गई। इस पर लड़की (दुल्हन) ने कहा, “कोई भी बाराती इस नायलोन की चप्पल को नहीं उठाना। इसे उठाएँगे दुल्हे मियाँ।”

दुल्हा मियाँ बोले, “मैं क्यों उठाऊँ?”

“उठाना पड़ेगा।”

“क्यों?”

“मेरे बाप ने 15,000 रुपए क्या हराम के दिए हैं?”



मनोज कुमार

कोयल किस के लिए गाती है ?

मनोज कुमार

एक जंगल था। उस जंगल के एक पेड़ पर बैठी कोयल अपनी सुरीली आवाज़ में गा रही थी। उसकी सुरीली आवाज़ सुनकर कुछ पक्षी उस जगह पहुँच गए। पक्षियों ने पूछा, “तुम क्यों गा रही हो?” तो कोयल ने जवाब दिया, “मैं अपने लिए गा रही हूँ। मैं बिना गाए नहीं रह सकती। मुझे गाना अच्छा लगता है।” यह सुनकर पक्षियों ने उसे वहाँ से भगा दिया।

तब वह कोयल कुछ दूर जाकर एक दूसरे पेड़ पर बैठ गई। वहाँ एक दूसरी कोयल बैठी थी। दूसरी कोयल ने पूछा, “तुम उदास क्यों हो?” पहली कोयल ने पूरा किस्सा बताया। दूसरी कोयल ने कहा, “तुमने गलत जवाब दिया। उन्होंने मुझसे भी यही पूछा था। मैंने कहा कि मैं तो तुम्हें सुनाने के लिए गा रही हूँ। तुम्हें खुश करने के लिए गा रही हूँ।”



ममता साहू

घर में हुई कथा

वन्दना सोनी

आज से करीब तीन साल पहले की बात है। जब मैं कक्षा चार की छात्रा थी। तब मैं मेरे गाँव बीकोर ज़िला नरसिंहपुर में पढ़ती थी। मेरा गाँव नर्मदा के किनारे है। अतः वहाँ पर पूजन-पाठ, कथा-प्रवचन अधिक होते हैं।

एक बार हमारे गाँव में काशी से पंडित जी, तिवारी जी के यहाँ पर आए। तिवारी जी के यहाँ कथा का प्रोग्राम रखा गया। पंडित जी के मंत्र में ऐसी शक्ति थी कि वे अग्निदेव को प्रगट कर देते थे। उस दिन से सभी तिवारी जी के यहाँ जाने लगे। उनके घर आदमी, औरतों और बच्चों की भीड़ लगी रहती।

मुझे और मेरी मम्मी को मुश्किल से जगह मिली। मैं तो धीरे-धीरे खिसकती हुई पंडित जी के सामने की लाइन में बैठ गई। कथा सुनने के बाद पंडित जी ने सभी से कहा, “अब अग्निदेव को प्रकट करेंगे और हवन कार्य पूर्ण करते हैं।”

इस तरह पंडित जी ने मंत्र पढ़ाने हुए शीशी का जल लेकर आम की लकड़ियों पर डाल दिया। वहाँ पर अचानक ही आग प्रगट हो गई। लकड़ियाँ चट-चट करती हुई जलने लगी। सभी आश्चर्य कर रहे थे। मैं तो घबराकर मम्मी के पास पहुँच गई थी। किन्तु गाँव के लोग अग्निदेव को प्रणाम कर रहे थे। उस दिन पंडित जी को बहुत पैसे मिले।

दूरारे दिन से कथा करने को पंडित जी को फुर्सत ही नहीं मिलती थी। उनकी प्रशंसा होने लगी। वैसे तो कथा का सामान एवं पंडित जी के नेग बहुत महँगे थे। फिर भी अग्निदेव के कारण सभी

वन्दना सोनी, सातवीं, पिपरिया, म.प्र.। चकमक नवम्बर, 1985 में प्रकाशित।

ममता साहू, छटवीं, पिपरिया, म. प्र.।

कथा कराते थे। मेरे मम्मी-पापा ने भी पंडित जी से कथा कराने को कहा। पंडित जी के पास एडवांस बुकिंग थी। उन्होंने चार दिन बाद का समय दिया। मम्मी ने कहा, “पंडित जी, मेरा बेटा पास हो जाए, हमें आशीर्वाद दो।” पंडित जी ने कहा, “ठीक है, कथा अच्छी तरह होना चाहिए। तुम्हारी मनोकामना पूरी हो जाएगी।”

दूसरे दिन मेरे भैया इन्दौर से आ गए। वे उस समय इन्दौर के गुजराती कॉलेज से बी.एस.सी. कर रहे थे। उन्होंने जब यह सुना कि पंडित जी अग्नि प्रगट करते हैं, तो वे बहुत आश्चर्य में पड़ गए। किन्तु जब उन्होंने पटेल की कथा में अग्नि को प्रगट होते देखा तो वे कुछ सोचने लगे।

दूसरे दिन हमारे घर पर कथा का आयोजन हुआ। हमने गाँव के सभी लोगों को बुलाया। मेरा भाई सुबह से नहाकर पंडित जी के साथ था। जब कथा प्रारम्भ हुई तो हमने भैया को पंडित जी के साथ बैठा दिया। कथा विधिपूर्वक हुई। हवन की तैयारी होने लगी। सभी सामान से हवन स्थान की पूजा की। फिर पंडित जी पहले की तरह मंत्र पढ़ते हुए शीशी का जल निकालकर आम की लकड़ियों पर डालने लगे। किन्तु पहले की तरह आग प्रगट नहीं हुई। इस तरह उन्होंने दो बार और किया, किन्तु अग्निदेव फिर भी प्रगट नहीं हुए। यह देखकर पंडित जी का चेहरा उदास हो गया। वे बोले, “सोनी जी, तुम्हारे घर में कोई ऐसा सदस्य है जिसके कारण अग्निदेव तुम से नाराज़ हैं। अतः उनकी शान्ति के लिए दो दिन का अभिषेक करना पड़ेगा।”

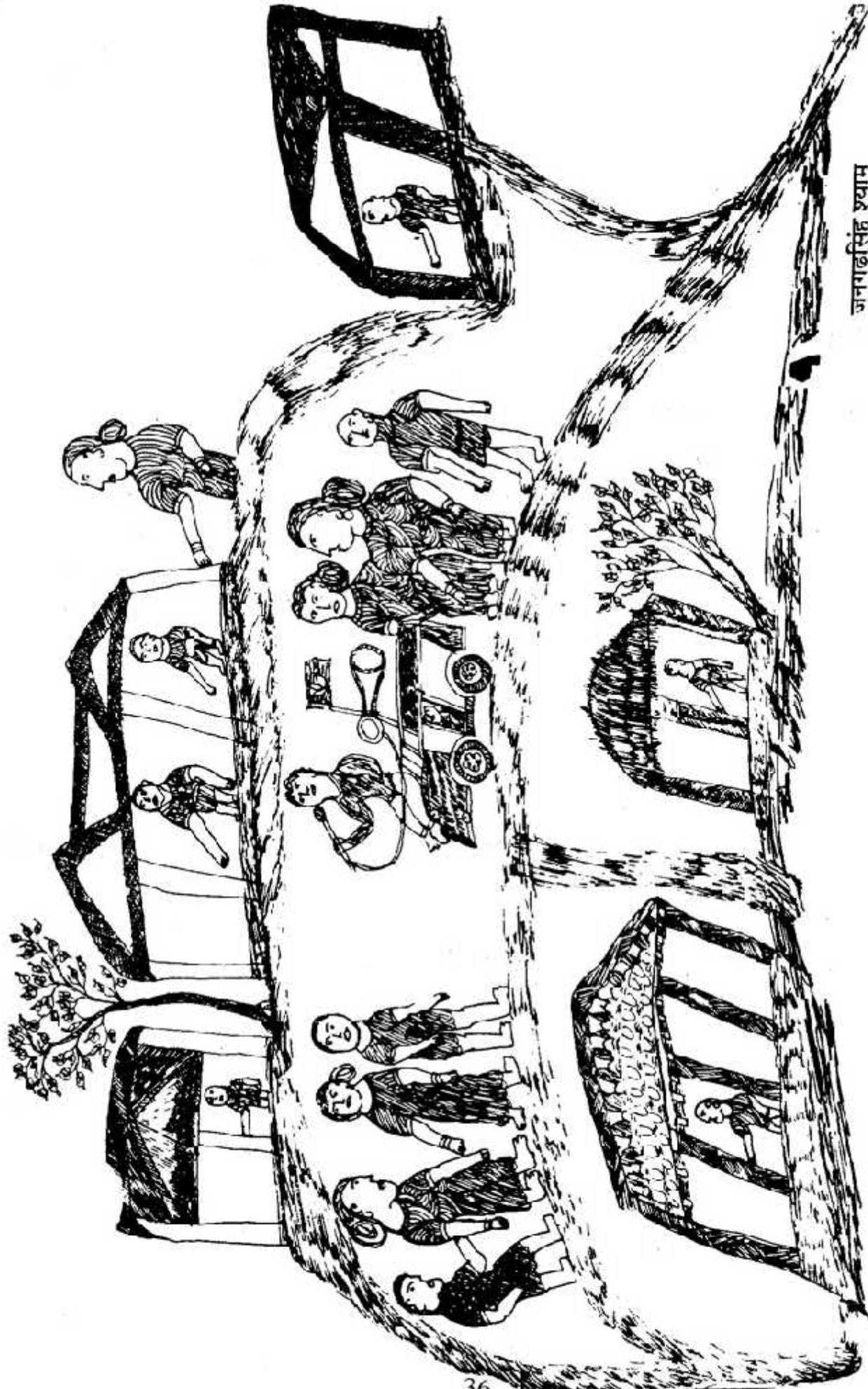
सभी मान गए। गाँव के लोग हमारे प्रति तरह-तरह की बातें करने लगे। मैंने थाली में अंगार लाकर दिए। भैया ने पवास पैसे थाली में रखकर मुझे थाली वापिस दे दी। विधिपूर्वक पूजा सम्पन्न हुई।

रात्रि के समय भैया और पंडित जी का बिस्तर भैया के कमरे में कर दिया था। जब मैं चाय लेकर वहाँ पहुँची तो भैया पंडित जी को डाँट रहे थे। वे पुलिस का भय भी दिखा रहे थे। मेरे को भैया के प्रति बड़ा गुस्सा आया। मैंने जल्दी से पिताजी और मम्मी से कहा। वे दोनों दौड़कर आए।

हम सबने देखा कि पंडित जी भैया के आगे हाथ जोड़ रहे थे। पिता जी ने कहा, “क्या बात है?”

तब भैया ने उस पाखण्डी की कहानी बताई। भैया बोले, “मैं पटेल की कथा से ही पीछा कर रहा हूँ। इसकी शीशी देख ली और उसका जल चुरा लिया। उसकी जगह साबुन का घोल बनाकर रख दिया। क्योंकि वह जल क्रोमिक एनहाइड्राइड के साथ ईथाइल अल्कोहल की क्रिया के फलस्वरूप काफी ताप उत्पन्न करता है। परिणाम स्वरूप ईथाइल अल्कोहल जल उठता है। यही घोल पंडित जी शीशी में भरकर रखे हुए थे। उन्होंने चुराए हुए जल को पास पड़ी हुई टीन पर छिड़का। छिड़कते ही आग प्रकट हो गई। मैं ही नहीं मम्मी-पापा भी आश्चर्य कर रहे थे। पंडित जी खड़े-खड़े सब देख रहे थे। अब पंडित जी मेरे पिताजी के पैरों पर गिर पड़े। पिताजी ने सोचा यदि इसकी कहानी अभी गाँव वालों के लिए बताएँ तो गाँव वाले पंडित जी की अच्छी मरम्मत करेंगे, जिसका शाप लगेगा। इसलिए उन्होंने कहा, “सुबह के पहले ही तुम इधर से चले जाना।”

जब मैं सोकर उठी तो पंडित जी का पता नहीं था। सुबह गाँव वालों को भैया ने रात वाली कहानी बताई। भैया ने वही प्रयोग करके कई बार बताया तो गाँव के लोग भैया की ही नहीं मेरे मम्मी-पापा की भी तारीफ़ कर रहे थे। मैं तो फूली नहीं समा रही थी।



जनगढ़सिंह श्याम

जब चुनाव हुआ

चंद्रशेखर चौधरी

अभी दिसम्बर में लोकसभा के चुनाव भए थे। मैंने जो देखा वह लिख रहा हूँ।

चुनाव का मौसम था। कई पार्टी में उम्दा जंग लगी थी। एक दिन मैंने देखा कि टाँगे में एक आदमी गाइक पर चिल्ला रहो थो, “राजीव गाँधी गद्दी पर, अटलबिहारी चड्डी पर।”

मैंने सोचा कि जो आदमी काय के मारे चिल्ला रहो है। बाके टाँगे में बहुत सारे झण्डा गड़े थे। मैंने सोचा कि जो झण्डा हवा के मारे लगाए गए हैं। इतने में एक जीप आई। वा में भी एक आदमी चोंगा में कह रहो थो कि, “अटलबिहारी कमल निशान माँग रहा है हिन्दुस्तान।”

मैंने एक आदमी से पूछो कि, “जो आदमी काय के मारे जोर-जोर से चिल्ला रहो है।”

वाने मेसे (मुझ से) केई (कही) कि, “जो आदमी चुनाव प्रचार कर रहो है।”

मैंने कई कि, जो “जोर-जोर से फालतू में चिल्ला रहो है।” इत्ते में एक जीप और आ गई। वा में छह-सात झण्डा गड़े थे। लोग कह रहे थे, “हटो-हटो नीखरा जी आ रहे हैं।”

मैंने कई कि अबे तक तो मैंने नीखरों दूध को नाम सुनो थो। अब जो नीखरा का बला है। इतने में एक आदमी बहुत सारी माला पहने हाथ जोड़ते आ रहा था। वा के माथे पर पर बहुत सारी गुलाल लगी थी।

मैंने एक आदमी से पूछा, “जो काय के मारे इतनो कर रहो है?”

चंद्रशेखर चौधरी, छटवीं, पिपरिया, म प्र.।

जनगढ़ सिंह श्याम, मण्डला, म. प्र.। कहानी तथा चित्र चकमक नवंबर, 1985 में प्रकाशित।

वाने कई कि, “ये लोकसभा के चुनाव में खड़ो है।”

दूसरे दिन जब मैं सो के उठो तो मैंने देखो, अरे मेरे दईया! जो का हमरे घर की दीवार से मोहल्ला भर में दीवार पर पंजा-पंजा, कमल-कमल लगे थे। मैंने मन-ई-मन कई कि जे तो बहुत गर्स रहे हैं। हमारी दीवार अब्बई पुतवाई थी। इन्ने आके वा हे पूरी गूद दई। इनकी तो.....! इतने में मेरे मुँह से गारी निकल गई।

दोक (दो-एक) दिन बाद मैंने देखा कि हमरे घर पाँच-छः आदमी आए हुए हैं। वे कह रहे हैं कि, “तुम्हारे पापा जी को बुलाना।”

मेरे भैया जी (पिताजी) तो पहले से ही टकला हैं। भैया जी बोले, “क्या बोल रहे हैं।”

मैंने कहा, “जे, आदमी वोट की केवे (कहने) के बारे में आए हैं।”

उन्होंने कहा, “अच्छा चुनाव वाले हैं।”

चुनाव वाले हाथ जोड़कर लल्लो-चप्पो करते हुए बोले, “आप कमल पर ही सील लगइयो।”

मैंने कई कि इनपे कित्ती सील हुएँ।

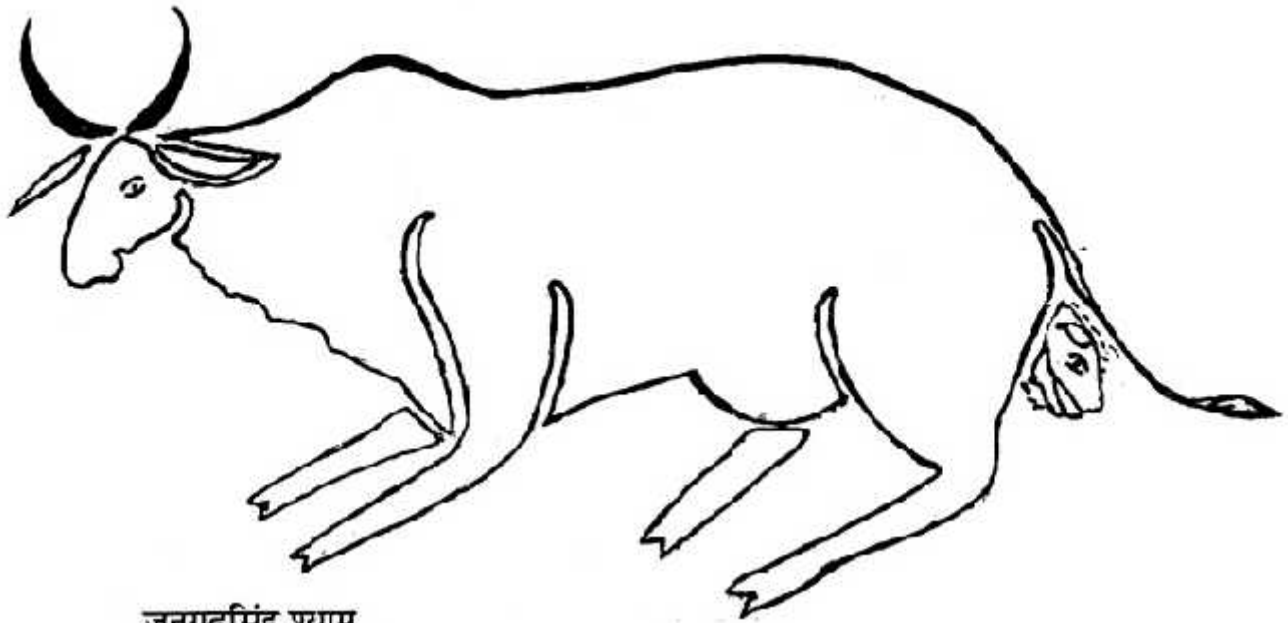
इसके दो-तीन दिन बाद चुनाव प्रचार बिलकुल बन्द हो गया। मैंने कई कि कल तो जे कित्ती जोर से चिल्ला रहे थे। अब काय नहीं चिल्ला रहे हैं।

फिर मेरे भैया जी वोट डालने जा रहे थे। मैंने कई, “भैया जी कहाँ जा रहे हो!”

भैया जी बोले, “मैं स्कूल जा रहा हूँ वोट डालने।”

जब भैया जी लौटकर आए तो उनके हाथ में सिहायी लगी थी। मैंने कई कि जो धब्बा कहाँ से आ गयो।

फिर चुनाव का माहौल शान्त हो गया।



जनगढ़सिंह श्याम

हमारी गाय जनी

अभिलाषा राजौरिया

आज सुबह चार बजे से ही मम्मी का यहाँ-से-वहाँ आना-जाना और कुछ-कुछ खटर-पटर करना लगा था। मेरी नींद तो खुल सी गई थी, पर मैं आलसी जो ठहरी। रजाई में, मुँह छिपाकर सोती रही। पूछा भी नहीं कि, “मम्मी आप इतनी जल्दी क्यों उठ गई।” डर यह था कि, पूछने पर मुझे ही कुछ काम न लगा दें।

करीब पाँच बजे मेरी छोटी बहिन प्रियंका अपने बाजू में मम्मी को न पाकर रोने लगी। उसका रोना सुनके मम्मी ने उसे समझाते हुए कहा, “प्रियंका बेटी आज अपने यहाँ छोटा-सा ‘मन्ना’ आया है।”

“सच मम्मी! यह कहते हुए मैं भी बिस्तर से उछल पड़ी।

मम्मी बोली, “हाँ-हाँ बेटे! प्रियंका को तुम ले चलो। मैं ज़रा गरम पानी कर लूँ।”

हम दोनों बहनें वहाँ गए, जहाँ गाय बँधी थी। बच्चा उसके

अभिलाषा राजौरिया, आठवीं, पिपरिया, म.प्र.।

जनगढ़ सिंह श्याम। कहानी तथा चित्र चकमक नवम्बर, 1985 में प्रकाशित।

सामने था। गाय उसे चाट-चाटकर साफ कर रही थी। इतने में मेरा छोटा भाई नीतेश भी उट गया। अब हम तीनों यह सोचने लगे कि 'मन्ना' को कैसे अपने पास लाएँ। क्योंकि गाय तो हमें मारने दौड़ रही थी।

भैया बोला, “दीदी, अपनी नन्दा तो कभी मारती ही नहीं है। आज यह मारने क्यों दौड़ रही है?”

इतने में पापा जी मुँह-हाथ धोकर आ गए। वह भी तीन-चार बजे से लगे थे। हम लोगों को उत्सुक देखकर बड़े प्रसन्न हुए। बोले, “कहो बच्चो, अपने घर कौन आया है?”

भैया ने पूछा, “पापा आज नन्दा मारने क्यों दौड़ रही है?”

पापा ने कहा, “बेटा, गाय को अपने बच्चे पर स्नेह होता है। सोचती है, ये लोग मेरे बच्चे को मारेंगे तो नहीं? इसीलिए पास नहीं आने देती?”

मैंने पूछा, “क्यों पापा, आज मंगलवार है?”

पापा ने कहा, “हाँ है! क्यों?”

“तब तो पापा हम अपने मन्ने का नाम मंगला ही रखेंगे ना!” मैं बोली।

इस पर पापा बड़े खुश हुए। मम्मी को बताते हुए कहा, “भई बच्चों ने तो बच्चे का नामकरण भी कर लिया। अब इसी खुशी में चाय मिल जाए। चार घण्टे से परेशान हो रहे हैं।”

इतने में मम्मी चाय का प्याला लिए ही आ गई। हम सभी को निर्देश देकर अन्दर भेजा कि जाओ तुम लोग मुँह-हाथ धोकर दूध पियो।

दूध पीकर हम लोग फिर गाय के पास आ गए थे। और कहीं

मन ही नहीं लग रहा था। अब मंगला नहा चुका था और आँगन में बैठा था। हम तीनों भाई-बहिन उसे हाथ फेर-फेरकर खिला रहे थे। प्रियंका तो भूसा उठा लाई और हाथों में रखकर उसके मुँह के पास ले गई। कहने लगी, “खा लो मंगला तुम्हें भूख नहीं लगी?”

तब माँ ने समझाया, “बेटा वो अभी-दूध ही पीता है। छोटा है ना! इसलिए भूसा नहीं खाता।”

हम लोगों का मन स्कूल जाने का नहीं हो रहा था। पर क्या करें, छःमाही परीक्षाएँ पास ही आ गई थीं। अतः मम्मी के समझाने पर मन मारकर स्कूल रवाना हुए। उस दिन स्कूल में भी मन नहीं लगा। शाम को स्कूल से आते ही बस्ते टेबिल पर डालकर मंगला के पास पहुँच गए। मंगला अब सुबह वाला मंगला नहीं रह गया था। हाथ रखते ही उठ खड़ा हुआ। फिर तो उसने उछलना शुरू कर दिया। हम लोग रात तक उसी के पीछे पड़े रहे। बार-बार मम्मी-पापा के ज़िद के करने पर सोए। ऐसा था हमारा यह दिन, जिस दिन हमारी नन्दा गाय जनी।



जनगढ़सिंह श्याम

पढ़ाई के लिए लड़ाई

मायाराम सराठे

लगभग दो वर्ष पुरानी बात है। मैं कक्षा आठ का छात्र था। होशंगाबाद जिले के बनखेड़ी ब्लॉक में मालहनवाड़ा स्कूल में एक शिक्षिका कक्षा आठ की गणित की पुस्तक पढ़ाती थी। वे शिक्षिका अपने दो-तीन वर्ष की उम्र वाले बच्चों के साथ कक्षा में प्रवेश करतीं। अपने छात्रों को न पढ़ाकर वे अधिकांश समय अपने बच्चों को खिलाने में व्यस्त रहतीं। उनको ज़रा भी अहसास नहीं होता कि उन छात्रों का क्या होगा जो कि प्रतिदिन कई किलोमीटर दूर से पढ़ने को पैदल आते हैं। माँ-बाप उनको किस आशा से भेजते हैं, और क्या-क्या मुसीबतें झेलकर पढ़ाते हैं।

मायाराम सराठे, पलिया पिपरिया, पिपरिया, ज़िला होशंगाबाद म.प्र.।

जनगढ़ सिंह श्याम, मण्डला, म. प्र.। कहानी तथा चित्र चकमक जुलाई, 1985 में प्रकाशित।

छः महीने तक ऐसा ही चलता रहा। मगर जब अर्द्धवार्षिक परीक्षा आई तब सब लड़के घबराए कि हम परीक्षा में सवालियों का जवाब कैसे देंगे। हमें तो बहिन जी ने कुछ भी नहीं पढ़ाया। अब क्या करें? अन्त में अर्द्धवार्षिक परीक्षा समाप्त हो गई। दो-तीन दिन बाद पता चला कि सब लड़कों को गणित में शून्य मिला है। हमने सोचा कि क्या हम इस स्थिति में अच्छे भविष्य की कल्पना कर सकेंगे? नहीं।

अब मामला बहुत टेड़ा हुआ। लड़कों ने सोचा कि अब तो वार्षिक परीक्षा के डेढ़ महीने ही बचे हैं। अभी भी यदि हमारी बहिन जी पढ़ाने लगीं तो हम सब पास हो सकते हैं। परन्तु बहिन जी पर कोई असर नहीं पड़ा। परीक्षा का समय बहुत नज़दीक था। सबको परीक्षा ने सोचने के लिए मजबूर किया।

कुछ लड़कों का कहना था कि हम हेडमास्टर से शिकायत करें। कुछ लड़कों ने घर और शिक्षकों के दबाव के कारण कहा कि हम चाहे परीक्षा में पास हों या न हों पर हेडमास्टर के पास नहीं जाएँगे। ये छात्र अधिकतर बड़े घरों, यानी सम्पन्न किसानों के लड़के थे। फिर भी आधे से ज़्यादा लड़कों ने यह फैसला किया कि हम तो हेडमास्टर के पास जाएँगे। अपनी बात कहेंगे। यह निर्णय बहुत हिम्मत से लिया गया।

दूसरे दिन दस-पन्द्रह लड़के हेडमास्टर के पास गए तो हेडमास्टर देखकर घबरा गए। शायद उन्हें समझ में नहीं आया कि इतने लड़के पहली बार इकट्ठे होकर क्यों आ रहे हैं। कुछ दाल में काला ज़रूर है। देखते ही कड़ककर पूछा, “क्यों आए हो?” कुछ साथी घबरा गए। फिर दुबारा प्रश्न किया तो हमारी हिम्मत बँधी।

हमने कहा, “हम आप से एक निवेदन करना चाहते हैं।”

हेडमास्टर ने गुस्से में कहा, “क्या निवेदन करोगे? साले, निवेदन करेंगे? आता-जाता कुछ है नहीं। बोलो क्या बात है?” हम घबराए तो थे ही। कुछ देर चुप रहकर कुछ छात्रों ने जवाब दिया, “सर जो हमारी गणित पढ़ाने वाली बहिन जी हैं, वे पढ़ाती नहीं है।”

हम अपनी बात पूरी भी नहीं कर पाए थे कि हेडमास्टर आग-बबूला

हो गए। बोले, “कैसे नहीं पढ़ाती? पढ़ाती तो हैं, साले पढ़ते तो हैं नहीं, कहते हैं पढ़ाती नहीं हैं। हाँ, अब पढ़ाएँगी। चले जाओ यहाँ से।”

ऐसे करते-करते करीब पन्द्रह दिन बीत गए। परन्तु पढ़ाई में कोई फर्क नहीं आया। अब तो परीक्षा और नजदीक आ गई। मैंने और कक्षा के अन्य साथी महेश, गया, घनश्याम, राकेश आदि करीब अठारह छात्रों ने कबड्डी खेलते समय वहीं बैठकर छोटी-सी एक मीटिंग की। उसमें हमने यही सोचा कि जिन छात्रों के पास पैसा है, वे तो एक वर्ष की जगह दो वर्ष भी पास न हों तो उनका कुछ बिगड़ने वाला नहीं है। पर जिन छात्रों के पास एक वर्ष पढ़ने की तो क्या कल खाने के लिए अनाज नहीं, तन पर पहनने के लिए कपड़े नहीं, रहने के लिए मकान नहीं, उनका क्या हाल होगा? उनके माँ-बाप दिन भर मेहनत करने के बाद भी एक टाइम खाना खाकर ही सो जाते हैं। वे गरीब क्या करेंगे? फैल हो जाएँगे तो सिर्फ यह काम कर सकेंगे कि किसी पटेल के घर के गाय-बैल चराएँगे। कई लड़के किसी के घर मजदूरी करेंगे। इसलिए हम एक काम करें, कि एक बार खुद जाकर बहिन जी से कहें कि आप हमें अपना कोर्स पूरा करवा दें। हो सकता है कि वे हमारी प्रार्थना पर ध्यान दें।

दूसरे दिन हमने यही किया। हमने एक दरखास्त लिखी। उसमें लिखा था “बहिन जी हम सभी छात्रों का आपसे नम्र निवेदन है कि हमें गणित का कोर्स पूरा करवा दें, वरना हम सभी छात्र फेल हो जाएँगे। इसका एक जीता जागता उदाहरण भी तो हमारे सामने है कि अर्द्धवार्षिक परीक्षा में हम सभी छात्रों को शून्य मिला है। आशा है कि आप हमारी प्रार्थना पर अवश्य ध्यान देंगी।” उनसे मिलकर भी हमने यही बात कही। उन्होंने हमें बहुत प्यार से कह दिया कि अच्छा हम पढ़ाएँगे। इसके बाद भी पढ़ाई में कोई अन्तर नहीं आया। अब तो हम परेशान हो गए। हर्गें कोई और रास्ता नहीं सूझ रहा था। क्या करें? तब मेरे मन में एक बात आई कि क्यों न हम एक दरखास्त बनाकर ए.डी.आई.एस. (सहायक ज़िला शाला निरीक्षक) साहब को दें। शायद कुछ हो जाए।

दूसरे दिन सुबह होते ही हमने स्कूल के अधिकतर लड़कों से पूछा

कि क्या ऐसा हो सकता है? अधिकांश लड़कों के उत्तर मिले, "नहीं, हम अपने गुरु जी की शिकायत नहीं करेंगे। पूछा कि क्यों? तो कहने लगे, "क्योंकि वे हमारे गुरु जी हैं। वे हमारे पिताजी से कह देंगे तो मार पड़ेगी।" फिर भी किसी तरह हमने समझाकर बताया कि इसमें नुकसान की बजाए फायदा ही अधिक है।

दूसरे दिन मैं और मेरे तीन-चार साथी सुबह से ही कोशिश कर रहे थे कि आज दो-तीन बजे एक मीटिंग बुलाई जाए। सारी बात खुले आम छठवीं, सातवीं व आठवीं के छात्रों से हो। स्कूल लगा और दो पीरियड बाद सब लड़के स्कूल से भाग निकले। स्कूल से एक किलोमीटर दूर दुधी नदी है। वहाँ अरहर का खेत था। करीब पचास-साठ लड़कों का झुण्ड अरहर के खेत में चला गया। खेत का मालिक चिल्लाया, "हमारे खेत में चोर घुसे।" उसने नजदीक आकर देखा तो उसका बेटा भी हमारे साथ था। उसने अपने बेटे से पूछा, "इतने लड़के खेत में क्यों लाए हो? खेत का सत्यानाश करवा दोगे।"

सब लड़कों ने कहा, "दादा जी हम खेत में कोई नाश नहीं करेंगे। हम तो अपनी बात करके चले जाएँगे।"

किसान ने कहा, "आज तक इतने लड़कों को मैंने ऐसे इकट्ठे बात करते हुए तो क्या खेलते भी नहीं देखा। मैं जानता हूँ तुम क्या बात करोगे? बेर खाओगे और पेड़ उखाड़ोगे।"

सब लड़के एक साथ बोले, "हमारी बहिन जी पढ़ाती नहीं हैं, उस पर बात करेंगे।"

दादा जी ने कहा, "अरे, यह तो अच्छी बात है। जरूर करो। हमसे जो मदद चाहो वह मदद करने को हम तैयार हैं।"

इतना कहकर वे चले गए। हम सब बैठ गए। सभी साथी प्रसन्न दिख रहे थे। बात शुरू हुई। बहुत सारे प्रश्न सामने आए। अब तो हमारी परीक्षा का एक महीना ही बचा है, और अभी तक कुछ भी नहीं पढ़ाया गया आदि। अन्त में फैसला लिया गया कि हम एक दरखास्त ए.डी.आई.एस को लिखें, जिसमें हम उन्हें अपनी पूरी परिस्थिति से परिचित कराएँगे।



जनगढ़सिंह श्याम

अगले दिन दो-तीन लड़कों ने मिलकर एक दरखास्त बनाई और सभी छात्रों से हस्ताक्षर करवाए। सिर्फ एक लड़के और दो लड़कियों ने हस्ताक्षर नहीं किए। अब दरखास्त की रजिस्ट्री करने के लिए पैसा कहाँ से आए? दस-पन्द्रह लड़कों ने मीटिंग करके यह तय किया कि हम पच्चीस-पच्चीस पैसे चन्दा करके रजिस्ट्री कर देते हैं। पैसे इकट्ठे किए और रजिस्ट्री कर दी। दरखास्त की एक प्रतिलिपि हेडमास्टर को भी देनी थी। सब घबरा रहे थे कि हेडमास्टर को दरखास्त कौन दे। अन्त में मैंने यह करना स्वीकार किया कि प्रार्थना होने के बाद मैं दरखास्त दे दूँगा। प्रार्थना ज्यों ही खत्म हुई मैंने दरखास्त हेडमास्टर को पकड़ा दी।

थोड़ी देर बाद वे घबराए हुए कक्षा में पधारे। बहुत अधिक गुस्से में कड़ककर बोले, “ये किसने दरखास्त लिखी है? खड़े हो जाओ।” सब लड़के खड़े हो गए। हेडमास्टर जी ने एक छड़ी मँगाकर सबकी पिटाई की। हम सब घबराहट से चुपचाप पिटाई सहते रहे। बाद में गाँव के सरपंच व अन्य पंचों ने स्कूल में शाला समिति की मीटिंग बुलाई, जबकि शाला समिति की मीटिंग इससे पहले कभी नहीं हुई थी। छात्रों को मीटिंग में बुलाकर सरपंच व हेडमास्टर ने धमकी दी।

सरपंच महोदय ने विद्यार्थियों से कहा, तुम्हें थाने में बन्द करवा देंगे। यह काम कानून के खिलाफ है।”

हेडमास्टर ने कहा, “हम तुम्हारा नाम काट देंगे। बताओ, कौन ने दरखास्ता तैयार करवाई है।”

हेडमास्टर से ऐसी कई प्रकार की धमकियाँ मिलने पर छात्र एकदम बदल गए और बोले कि ये दरखास्त तो मायाराम ने लिखी है। मेरा एक निकट साथी, जिसने इस पूरे मामले में पूरी तरह पहल की थी, वह भी बदल गया। उसने बताया कि मुझसे तो धमकी देकर हस्ताक्षर करवाए गए थे। मुझसे अधिक उम्र वाले छात्रों ने भी यही कहा। इसका कारण यह था कि उन पर सरपंच व हेडमास्टर ने दबाव डाला था। केवल पनागर के घनश्याम चौकसे, परसवाड़ा के नारायण सिंह पटेल,

और मेरे गाँव के महेश ठाकुर ने इस दबाव के बावजूद मेरा साथ दिया।

मुझे धमकी दी गई, “तुम्हें थाने में बन्द करवा देंगे। तुम्हारा नाम काट देंगे। तुम नेतागिरी बताते हो? लड़कों को भड़काते हो।”

अगले दिन हेडमास्टर ने कहा, “तुम अपने पिताजी को बुलाकर लाना।”

मैंने कहा, “मैंने दरखास्त लिखी है। मेरे पिताजी ने क्या किया है। मैं अपराधी हूँ। उनको फुर्सत नहीं है। वे नहीं आ सकते।” मुझे नाम काटने वाली धमकी कई बार दी गई। आखिर मैंने कह ही दिया, “नाम काट दो, मगर लड़कों को पढ़ाओ तो।”

आखिर सब लोग समझ गए कि ऐसे नहीं चलेगा। लेकिन शिक्षा विभाग ने कोई जाँच नहीं की। पता नहीं, शायद शिक्षा विभाग को ऐसे मामलों में पहल करने का कानून न हो। क्या शिक्षा विभाग को नहीं चाहिए था कि वह कोई अन्य व्यवस्था करे?

कुछ दिन बाद इस पूरी बात का इतना असर हुआ कि शिक्षिका तो पूरे दिन पढ़ाती ही रहती थीं। अतिरिक्त कक्षा भी पढ़ाती थीं। यहाँ तक भी हुआ कि बहिनजी ने तो रात में भी और इतवार को भी पढ़ाया। इसका परिणाम यह हुआ कि कक्षा आठ के सभी छात्र उत्तीर्ण हो गए। और दो लड़के तो मेरिट में भी आ गए।

हमने पूरे मामले से कुछ सीखा ज़रूर। एक तो हमने दरखास्त में यह लिखा था कि हमें दो ही अध्याय पढ़ाए हैं लेकिन वास्तव में छह अध्याय पढ़ाए गए थे। पर हमारी समझ में दो ही अध्याय आए थे। उस समय हमको ऐसा लगा कि बाकी चार अध्याय उनके पढ़ाने न पढ़ाने के बराबर थे। लेकिन इस पूरी बात को ढंग से न लिख पाने के कारण लोगों ने गलती निकाली, जिसके चलते भी हमारा मामला कमजोर पड़ गया। इससे यह सबक सीखा कि इस तरह की किसी भी घटना में तथ्यों को पूरी तरह सामने लाना ज़रूरी है। हमने यह भी सीखा कि सही बात को सामने रखने का क्या मतलब है।

एकलव्य : एक परिचय

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है। यह पिछले कई वर्षों से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है। एकलव्य की गतिविधियाँ स्कूल व स्कूल के बाहर दोनों क्षेत्रों में हैं।

एकलव्य का मुख्य उद्देश्य ऐसी शिक्षा का विकास करना है, जो बच्चे व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो। और खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो। अपने काम के दौरान हमने पाया कि स्कूली प्रयास तभी सार्थक हो सकते हैं जब बच्चों को स्कूली समय के बाद, स्कूल से बाहर और घर में भी रचनात्मक गतिविधियों के साधन उपलब्ध हों। इन साधनों में किताबें तथा पत्रिकाएँ एक अहम हिस्सा हैं।

पिछले कुछ वर्षों में हमने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में भी किया है। बच्चों की पत्रिका **चकमक** के अलावा **स्रोत** (विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर) तथा **शैक्षणिक संदर्भ** (शैक्षिक पत्रिका) हमारे नियमित प्रकाशन हैं। शिक्षा, जनविज्ञान, बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ, सामग्री आदि भी एकलव्य ने विकसित एवं प्रकाशित की हैं।

वर्तमान में एकलव्य मध्यप्रदेश में भोपाल, होशंगाबाद, पिपरिया, देवास, इन्दौर व शाहपुर (बैतूल) में स्थित केन्द्रों तथा परासिया (छिंदवाड़ा), हरदा व उज्जैन में स्थित उपकेन्द्रों के माध्यम से कार्यरत है।



ISBN: 81-87171-07-3

मूल्य: 20.00 रुपए